इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

त्रिदिवसीय संस्कृति उत्सव का एक संक्षिप्त विवरण

दिनांक : २९-१२-२०१४

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं उसकी स्वयायत्त संस्थाओं द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय '**संस्कृति**' उत्सव के अन्तर्गत इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा तीन विस्तृत प्रदर्शनियों का आयोजन विगत २५ से २७ दिसम्बर, २०१४ को दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के महामना कला वीथिका में किया गया था। संस्कृति उत्सव का उद्घाटन स्वतन्त्रता भवन, काशो हिन्दू विश्वविद्यालय में महामान्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा अन्य मंत्रियों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के सभी सहयोगियों द्वारा कला, सौन्दर्यशास्त्र, भारतीय साहित्य तथा दर्शन को केन्द्र में रखकर विराट् पुस्तक प्रदर्शनी तथा विक्रय पटल लगाया गया था, जहाँ इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के चुन हुए प्रतिष्ठाप्राप्त प्रकाशनोंके अतिरिक्त दिल्ली के प्रमुख प्रकाशकों द्वारा उपर्युक्त विषयों पर प्रकाशित मानक ग्रन्थों को भी प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी में प्रथम राजराज चोल के द्वारा निर्मित कराये गये तंजौर के बृहदीश्वर मन्दिर के चित्र तथा उसकी बृहदाकार प्रतिकृति भी प्रदर्शित की गई। यह उल्लेखनीय है कि यह मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी व चोल स्थापत्य कला का एक अनुपम निदर्शन है और इसी कारण यूनेस्को ने इसको विश्व स्मारक घोषित किया।

इस अवसर पर इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के द्वारा निर्मित अन्तर्क्रियात्मक बहुमाध्यमिक CD/DVD का प्रदर्शन तथा विक्रय किया गया जिसमें मन्दिर के विशाल वृहदाकार शिवलिंग की प्रतिकृति स्थापित की गई थी। इसमें मन्दिर के विमान के भीतर तथा उपरितल में विद्यमान मूर्तियों के साथ सम्बद्ध ध्यानश्लोकों का ध्वनिपाठ भी निरन्तर चलता रहा। इसी प्रदर्शनी में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र वे वर्णनानुसार मन्दिर के भीतरी भाग की भित्ति पर उकेर गये १०८ नृत्यकरणों को भी दिखाया गया।

पुस्तक तथा बृहदीश्वर प्रदर्शनी के अतिरिक्त महामना कलावीथिका के उपरितल में इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा तीनों दिन वृत्तचित्र प्रदर्शन का कार्यक्रम भी चला जहाँ तीन दिनों में कुल ९ वृत्तचित्र प्रदर्शित हुये जिसमें 'वेदों की मौखिक परंपरा' एवं 'रामलीला' शीर्षक चित्रों में इस देश की अनुपम पवित्र परम्परा प्रतिफलित हुई। उसी के साथ 'गंगा' चित्र में मुखोबा से गंगोत्री तक की यात्रा का एक अपूर्व वर्णाढ्य प्रदर्शन हुआ।

चोल स्थापत्य कला तथा धरोहर के मूर्तरूप बृहदीश्वर प्रदर्शनी तथा पुस्तक प्रदर्शनी एवं वृत्तचित्रों को देखने के लिये तीनों दिन प्रदर्शनीकक्ष कलामर्मज्ञ रसिक प्रेक्षकों से परिपूर्ण था।

(प्रणति घोषाल)
एसिस्टन्ट प्रोफेसर I